बाल साहित्य

नन्हें-नन्हें फूल

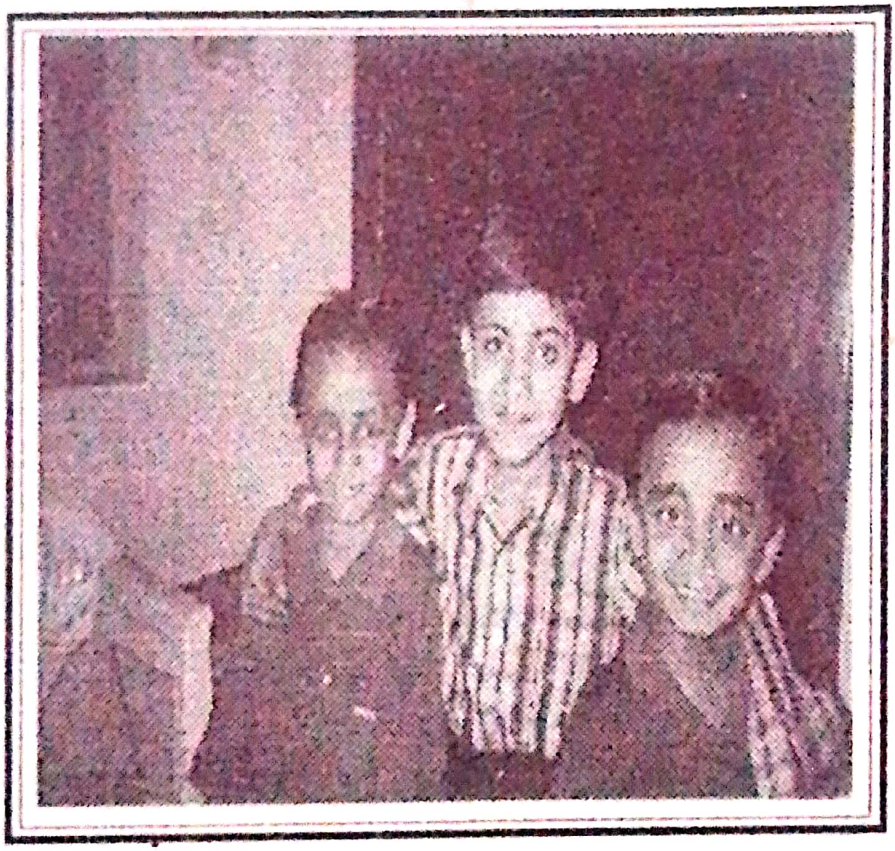

गोपीचन्द श्रीनागर

Scanned with OKEN Scanner

पुण्य स्मृति में

मुझ से दो बड़े भाई थे। शास्त्रीय संगीत गायक पं0 कृष्ण राव शंकर पंडित (ग्वालियर) के शिष्य **श्री फूल चन्द्र जी जौहरी** व दूसरे युवावस्था में रह चुके अनुशासनप्रिय कम्पनी कमांडेंट व दि स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक (कानपुर) के अधिकारी **श्री गुलाब चन्द्र जी जौहरी**। इनके बड़े काम थे, बड़े नाम थे।

इन दोनों भाइयों के स्वर्ग सिधार जाने के बाद, बिना कुछ करे-धरे भाइयों में मैं बड़ा बन गया। आदमी अपने कामों से बड़ा बनता है। दूसरे की खींची गई रेखा के बिगड़ जाने से बड़ा नहीं बनता है।

इन दोनों आदरणीय बड़े भाइयों की पुण्य स्मृति में मैं उनकी दिवंगत आत्माओं को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

समर्पण

देश के उन तमाम जाने-अनजाने भांति-भांति के चहकते-महकते नन्हें मुन्ने मासूम फूलों को मेरी यह पुस्तक **''नन्हे-नन्हे फूल''** समर्पित है जो अपनी महक, अपनी चहक, अपनी किलकारियों से अपने घर-आंगन की बगियों को गुंजायमान बनाते रहते है।

जिस धरती की माटी में पनपते है उसी माटी में सम्पूर्णतः मिलकर अपनी सार्थकता का अहसास कराते हैं। इन्हीं नन्हें-मुन्नों के लिए मेरा यह बचकाना प्रयास समर्पित है। आशा है कि नन्हें-मुन्ने इसे पसंद करेंगे।

-गोपी चन्द श्रीनागर

रचना

नन्हें-नन्हें फूल

(इक्कीसवीं सदी की ओर हिन्दी बाल कविता के बढ़ते कदम)

रचनाकार

© गोपी चन्द श्रीनागर

प्रकाशक

श्रीमती शीला वर्मा

श्याम-शिव प्रकाशन

'राजो लहर' -नया रायगंज

सीपरी बाजार, झाँसी-284003

(चहक-महक- 362015)

प्रथम संस्करण

मूल्य रु0-15.00

विजयादशमी 2001

Scanned with OKEN Scanner

बच्चों का संविधान

पहला पन्ना

भारत के हम
रंग बिरंगे
नन्हे-नन्हे फूल,
आज
प्रतिज्ञा करते हैं कि-
प्रकृति द्वारा सौंपी गई
अपनी आभा, चहक-महक से
अपनी बगिया को,
सदा-सदा
चहकाते-महकाते रहेंगे ।
साथ ही हम सब
मिलजुलकर
इस नई शताब्दी को
नई खुशियों से भरेंगे,
बीते हुए कल से
इसे
और अधिक
सुन्दर व अच्छा बनायेंगे ।।
जय हिन्द ! जय भारत !!

एक तथ्य यह भी

कविता की उत्पत्ति के सम्बध में विद्वानों की अलग-अलग अवधारणायें रही हैं। मेरा मानना है कि बाल कविता विश्व में सबसे पुरानी कविता है जिसका मूल-लोरी विधा में छुपा हुआ है।

इस धरती पर
जब किसी नारी ने
पहली बार
किसी शिशु को
जन्म दिया होगा,
स्वस्थ तन-मन से
उसे निहारा होगा,
गद्‌गद् गोद में
भरा होगा,
दुलराया होगा–
पुचकारा होगा,
दो मीठे बोल
बोले होंगे,
उसी क्षण
बाल कविता का
जन्म हो गया होगा ।

(रेल राजभाषा)

-गोपीचन्द श्रीनागर

Scanned with OKEN Scanner

लेखक परिचय

गोपीचन्द श्रीनागर

जन्म - 17 मार्च सन् 1934 ई0 (कानपुर)

शिक्षा - डी. ए. वी. कालेज, कानपुर से कला स्नातक (सन् 1955 ई0)

पिताश्री - स्व0 श्री मानिक चन्द्र जौहरी "चाचा"

माताश्री - स्व0 राजरानी (राजो) जौहरी "बहू जी"

सम्प्रति - सेवानिवृत्त वरिष्ट अनुभाग अधिकारी (लेखा), मध्य रेल, झाँसी।

सन् 1955 ई0 से निरन्तर देश की अनेक प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपते आ रहे हैं। अब तक चौदह सौ से ऊपर छोटी-बड़ी रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। हिन्दी में फिलेटली के चर्चित लेखक हैं।

प्रकाशित पुस्तकें

श्याम-शिव प्रकाशन, झाँसी

- दादी की पहेलियां (गीत पहेलियां)
- चुनमुन (बालगीत)
- राम की कथा (शिशु गीतों में)
- नटखट (कहानियां व गीत)
- जय झांसी की रानी (शिशु गीतों में)
- रुनझुन (बालगीत)
- तीस जनवरी गांधी चुप (कविता)
- नन्हें-नन्हें फूल

विश्वनाथ प्रकाशन वाराणसी-

- गीतों से हम सीखें ज्ञान (बालगीत)
- सुन्दर और सजीले गीत (बालगीत)

गौतम ब्रदर्स, कानपुर

- नन्हे बच्चे, नन्हे गीत (शिशुगीत)

(इन सभी पुस्तकों के सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित है।)

लेखक - गोपीचन्द श्रीनागर

कम्प्यूटराइज कम्पोजिंग एवं सेटिंग - पीताम्बरा कम्प्यूटर, झाँसी फोन : 445162